अंक – 35 । जनवरी – जून 2017

भाकृअनुप ICAR

CIRG 1979 MATHURA

अजामुख

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:
डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :
डा. गोपाल दास
डा. अनु राहल
डा. नीतिका शर्मा
डा. विजय कुमार
डा. हरिऔध तिवारी

टंकक
जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

सर्वप्रथम मैं बकरी पालन से अपनी आजीविका चलाने वाले किसानों को साधुवाद देना चाहता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से बकरी पालन के द्वारा देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमारे देश में वर्तमान समय में करीब 13.5 करोड़ बकरियाँ है जो कि देश के प्रत्येक जलवायु क्षेत्रों में बहुलता से पाई जाती हैं। देश में बकरियों की कुल 28 नस्लें हैं । इसके साथ ही बड़ी मात्रा में देशी (अवर्णित नस्ल) बकरियाँ पाई जाती हैं। बकरियों द्वारा देश में 0.94 मिलियन टन माँस का तथा 5.62 मिलियन टन दूध का उत्पादन होता है। बकरियों पर किए जा रहे शोध कार्यों के फलस्वरूप बकरी बीमारियों (जे.डी., ब्रसुल्लोसिस) का निदान करने की किट संस्थान द्वारा विकसित की गई है। बकरियों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले चारे/ दाने का भी विकास किया गया है। बकरी के उत्पादों जैसे माँस के द्वारा बने विभिन्न प्रकार के व्यंजन एवं खाद्य पदार्थ विकसित किए गए हैं। बकरी की अखिल भारतीय समन्वयक परियोजना के अन्तर्गत देश की 18 नस्लों पर शोध कार्य विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों /संस्थानों के सहयोग से चलाया जा रहा है, जिसके अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए हैं। बकरियों के वैज्ञानिक ढंग से पालन पोषण पर संस्थान द्वारा इस वर्ष में 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसमें बड़ी संख्या में उद्यमी, किसान, बकरी पालक, बेरोजगार एवं महिलाऐं भाग ले रही हैं। परिणामस्वरूप देश में बकरी पालन को व्यावसायिक रूप देने में काफी मदद मिल रही है।

मैं संस्थान के सभी वैज्ञानिकों की उनके द्वारा किए गए उत्तम शोध कार्यों के लिए सराहना करता हूँ। मैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक एवं सचिव डेयर डा. टी. महापात्र की सतत प्रेरणा एवं सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। आदरणीय डा. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। इनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

आशा करता हूँ कि बकरी पालन पर प्रकाशित संस्थान का यह मुखपत्र बकरी पालकों, उद्यमियों एवं पशु प्रसार में संलग्न कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

(एम. एस. चौहान)
निदेशक

बकरियों में चक्कर रोग (गिड), बचाव एवं रोकथाम

रूपेश वर्मा, गिरिधारी दास, दिनेश कुमार शर्मा, सौविक पाल और के. गुरूराज

परिचय :- यह रोग *टीनिया मलटिसेप्स* परजीवी की लार्वा अवस्था *सीन्यूरस सेरीब्रेलिस* से होता है जो बकरियों एवं पशुओं के मस्तिष्क में पहुँचकर सिस्ट के रूप में वृद्धि करते हैं जिससे चक्कर काटने का रोग पैदा होता है। *टीनिया मलटिसेप्स* जो कुत्तों, लोमड़ी और गीदड़ की छोटी आँत में पाया जाने वाला परजीवी है । संक्रमित पशु के मल विसर्जन के साथ आये इस परजीवी के अण्डे चारागाह या पशु बाड़े को प्रदूषित करते हैं । यदि पशु इन अण्डों को आहार या पानी के साथ ग्रहण कर लेता है तो इस रोग से संक्रमित हो जाते हैं।

रोगजनन :- संक्रमण के लगभग एक से तीन सप्ताह बाद जब अल्पविकसित कृमि (*सीन्यूरस सेरीब्रेलिस*) पशुओं के मस्तिष्क या मेरूरज्जु में धीरे-धीरे सिस्ट के रूप में वृद्धि करता है । परजीवी वृद्धि के कारण मस्तिष्क पर दबाब पड़ता है और पशुओं में मानसिक विकार उत्पन्न होता है । इस रोग का प्रभाव सिस्ट के आकार और मस्तिष्क में परजीवी की स्थिति पर निर्भर करता है

रोग के लक्षण :- इस रोग के विशेष रोगलक्षण संक्रमण के लगभग दो से सात माह बाद प्रकट होते हैं। पशु अनिश्चित गतिविधि करता है जो केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र में परजीवी की अवस्थिति के अनुसार लक्षण के रूप में प्रकट होती है। सामान्यत: रोग में निम्न लक्षण देखे जा सकते हैं -

1. पशु खाना-पीना छोड़ देता है।
2. मस्तिष्क में सिस्ट के कारण सिर पर दबाव पड़ता है जिससे पशु का सिर एक ओर झुक जाता है तथा पशु एक वृत्त में गोल-गोल चक्कर लगाने लगाता है।
3. सिर को एक ओर उठाकर चिल्लाता है।
4. पशु लड़खड़ाता हुआ चलता है।
5. दाँत चबाना, लार गिराना एवं संतुलन खो देना।
6. पशु का हल्का सा तापमान बढ़ सकता है।
7. आँखें बड़ी हो जाती हैं।
8. पशु का स्वास्थ्य गिरता जाता है।
9. पशु के सिर को देखने पर पिछला भाग (सिरेब्रल हेमिस्फेयर) कोमल प्रतीत होता है और साथ में ऊपर को उठा हुआ दिखाई पड़ता है।

निदान :- इस रोग का निदान रोगी पशु के लक्षण देखकर किया जाता है इसके अलावा सी टी स्केन, एम आर आई से भी किया जा सकता है । परंतु यह आर्थिक रूप से संभव नहीं हो पाता है।

उपचार :- इस रोग के लिए कोई औषधीय चिकित्सा संभव नहीं है। परंतु फिर भी प्राजीक्वेंटल औषधि का प्रयोग किया जा सकता है। सिर पर ठंडे पानी की धार डालने से पशु को लाभ मिलता है। शल्य चिकित्सा ही एक मात्र समाधान है परंतु आर्थिक रूप से यह संभव एवं व्यवहारिक नहीं है इसलिए पशु का निष्कलन किया जा सकता है । आमतौर पर प्रभावित अंग को विलग कर पशु के मांस का उपयोग किया जा सकता है।

रोकथाम :- इस रोग के रोकथाम के लिए पशु बाड़े को साफ-सुथरा रखना चाहिए । कुत्ते या अन्य जंगली जानवर बाड़े में न घुसें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। पशुओं को कृमिनाशक दवाईयों से परजीवीनाशन करवानी चाहिए । साथ ही साथ पशुचिकित्सक की सलाह से आस-पास के कुत्तों का भी परजीवीनाशन करवा देना चाहिए जिससे परजीवी का संक्रमण कम फैले।

मस्तिष्क में *टीनिया मलटिसेप्स* परजीवी की लार्वा अवस्था *सीन्यूरस सेरीब्रेलिस*

जखराना ब्रायलर मेमना उत्पादन के लिए प्रजनन तथा प्रबन्धन व्यवस्था

डा. साकेत भूषण

प्रजनन कार्यक्रम : 'ब्रायलर मेमना' का अर्थ जखराना बकरी के मेंमनों का वजन 12 माह पर 40 कि.ग्रा. तथा उसके अधिक करके कम समय पर अधिक से अधिक माँस उत्पादन करना। प्रजनक रेबड़ में प्रजनन के लिए चयनित प्रजनन की प्रक्रिया अपनाई जाती है। प्रजनन कराने के लिए प्रजनक बकरे तथा बकरियों का चयन उनके 9 माह के शारीरिक भार के आधार पर किया जाता है। इस प्रबंधन व्यवस्था में प्रत्येक प्रजनक नर तथा मादा का वजन, जन्म तिथि, मादा की ब्यांत कम भार वाले नर तथा मादा मेमनों का निष्कासन किया जाता है। प्रजनन के लिए केवल आनुवांशिक रूप से वजन के लिए उच्च क्षमता वाले शीर्ष नरों का चयन कर लिया जाता है जिससे प्रजनक रेबड़ में आनुवांशिक रूप अधिक भार वाले नर ही रहें। बकरियों से मेमना पैदा होने के बाद 2–3 माह की उम्र पर नर मेंमनों का चयन कर लिया जाता है । फिर उनको अलग रख कर शारीरिक भार में वृद्धि के लिए विशेष रूप से ब्रायलर मेमना के रूप में पाला जाता है। बकरी पालक शेष बची मादा मेंमनों को भविष्य के लिए प्रजनक मादाओं के रूप में रखकर पाल सकते हैं अथवा प्रजनक मादाओं की संख्या बाड़े की क्षमता से ज्यादा होने पर उनको प्रजनक मादाओं के रूप में अन्य किसानों को अच्छी कीमत पर बेच भी सकते हैं जिनसे अच्छे मेमने तथा दूध भी प्राप्त किया जा सकता है। बकरियों में प्रजनन के लिए मदकाल खास ऋतु में आता है जो कि लगभग 3 दिन तक रहता है। प्रजनन ऋतु में प्रत्येक दिन सुबह एवं सायं नकली सहवास के लिए एक बकरे के जननांग के ऊपर बड़ा सा कपड़ा लगाकर कमर पर बांधकर उसको वयस्क मादाओं के बीच छोड़ देते हैं। नर केवल मदकाल में रहने वाली मादा से ही सहवास का प्रयास करेगा। इस तरह मदकाल वाली मादा की पहचान करके चयनित बकरे का चयनित मादा से प्रजनन कराना चाहिए। जिन किसानों के पास बकरियाँ चराने के लिए चरागाह की व्यवस्था है वे बकरी पालक प्रजनक रेबड़ रखकर मेमनें पैदा करके भूमिहीन किसानों तथा मजदूरों को 2 से 3 माह के मेमनें बेच कर भूमिहीन किसानों तथा मजदूरों को ब्रायलर मेमना उत्पादन की सुविधा दे सकते हैं। इससे न केवल कम समय में किसानों को वित्तीय लाभ मिलेगा बल्कि वे दूसरे गरीब किसानों के लिए उनके गांव –घर पर ही उनके रोजगार सृजन में सहायता कर सकते हैं।

मेमनों का चयन तथा निष्कासन ब्रायलर मेमना रेबड़ में निष्कासन कार्यक्रम की समीक्षा मेमनें के जन्म वजन तथा 3 माह के स्तर पर की जाती है। निम्न तालिका में दी हुई ब्यांत संख्या तथा आयु के वजन से अगर रेबड़ मे पैदा हुए मेमने का वजन कम है तो उसको प्रजनक रेबड़ से निष्कासित कर दिया जाता है। मुख्य रूप से प्रजनक रेबड़ के लिए नर बच्चों का निष्कासन आधार पर 3 माह पर तालिका से निम्न वजन (कि.ग्रा.) के आधार पर किया जाना चाहिए। बाद में चयन समीक्षा 6 तथा 9 माह पर भी की जानी चाहिए ताकि 12 माह पर मेमने का वजन तालिका में दिए वजन से कम न हो।

तालिका: ब्रायलर मेमना रेबड़ में नर मेमने के निष्कासन कार्यक्रम के लिए ब्यांत संख्या के अनुसार मेमने के जन्म, वजन 3, 6, 9 तथा 12 माह का वजन ।

ब्यांत सं.	जन्म वजन	3 माह	6 माह	9 माह	12 माह
1	2.50	8	12	18	35.00
2	2.55	8.5	13	19	37.00
3	2.60	9	14	20	38.00
4	2.55	8.5	13	19	36.00
5	2.50	8	12	18	35.00
6 तथा ऊपर	2.45	7.5	11	17	33.00

(वजन कि.ग्रा. में)

ब्रायलर मेमनों का प्रबन्धन : मेमनों के जन्म के तुरन्त बाद उनकी नाल काट कर घाव पर टिन्चर आयोडीन लगाई जाती है तथा मेमनों को खीस पिलाई जाती है। मेमनों का जन्म के समय का वजन, उनका लिंग, जनन का प्रकार तथा प्रसव के पहले माँ के वजन का अभिलेखन किया जाता है। मेमनों को एक हफ्ते की उम्र तक दिन में

3-4 बार दूध पिलाया जाता है। उसके बाद केवल सुबह शाम दूध पिलाया जा सकता है। मेमनों की उम्र 3 माह की होने पर उनको मां का दूध पिलाना बंद कर दिया जाता है। तीन माह की उम्र के बाद चरागाह उपलब्ध होने पर मेमनों को प्रतिदिन 4-6 घंटे चराया जाता है। मेंमनों का जन्म के तुरन्त बाद वजन उसके बाद से 3 महीने की उम्र तक हर पखवाड़े तथा उसके बाद प्रति माह मेमनों का वजन का अभिलेखन किया जाता है। जिससे उसकी बढ़वार का पता चलता रहे ताकि कम वजन के मेमनों को निष्कासित किया जा सके। मेमनों के जीवन के लिए पहला माह संकटमय होता है। इसलिए इन दिनों में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। अच्छी देखभाल से मृत्यु दर कम की जा सकती है। मेमनों के स्वस्थ विकास के लिए पहली बार पेट के कीड़े मारने की दवा (डिवर्मिंग) ब्रायलर मेमने को 45वें दिन की उम्र पर दिया जाना चाहिए । उसके बाद डिवर्मिंग आवश्यकता अनुसार दोहराया जाना चाहिए। एक माह बाद मेमनों को छोटे फीडर में पिसा दाना तथा थोड़ा-थोड़ा हरा चारा देना शुरू करें। मेमनें इसे धीरे-धीरे खाना शुरू कर देंगे। इस राशन को 12 घंटे तक खाने के लिए देना चाहिए। बाजार में स्टार्टर तथा फिनिशर दाना उपलब्ध होता है। उसको खरीद कर तीसरे माह से 6 माह तक ब्रायलर मेमना को स्टार्टर दाना दें। 6 माह से 12 माह तक फिनिशर दाना उसकी इच्छानुसार खिलाऐं। अगर मेमनों का राशन बाजार में उपलब्ध नहीं होता है तो बकरी पालक पशु पोषण विशेषज्ञ से सलाह लेकर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके स्वयं दाना तैयार कर सकते हैं। एक माह की उम्र से सामान्य बीमार होने पर मेमनें को कोई एन्टीबायोटिक दवा पशु चिकित्सक से पूछकर दें ताकि मेमनों को बीमारियों से बचाया जा सके। शुरू के दिनों में जमीन पर लगाई गई बिछावन को रोजाना साफ करें। पानी का बर्तन रखने की जगह हमेशा बदलते रहें। मरे हुए मेमने को कमरे से तुरन्त बाड़े से निकाल दें तथा नजदीक के अस्पताल या पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय से पोस्टमार्टम करा लें। पोस्टमार्टम कराने से यह मालूम हो जायेगा कि मौत किस बीमारी या किस कारण से हुई है जिससे आगे के लिए उस बीमारी के प्रति सावधानी बरतें। बाड़े के दरवाजे पर एक बर्तन या नाद में फिनायल का पानी रखें। मेमने के बाड़े में जाते या आते समय आने जाने वाले लोग पैर अवश्य धो लें। यह पानी रोज बदल दें। उचित प्रबन्धन द्वारा ब्रायलर मेमना पालन में मेमनों की मृत्यु दर 6-7 प्रतिशत तक या उससे कम कर लेते हैं जिससे कम से कम आर्थिक नुकसान के साथ अधिक से अधिक फायदा हो। बारह माह की उम्र पर ब्रायलर मेमना को बेच देना चाहिए, क्योंकि इस उम्र पर न केवल ब्रायलर मेमना का माँस स्वादिष्ट होता है बल्कि उसमें अधिकतम पोषक तत्व भी होते हैं।

बकरियों के सामान्य उपचार

अनु राहल एवं नीतिका शर्मा

व्यवसायिक बकरी पालन करने के लिए बकरी की प्राथमिक चिकित्सा के बारे में जानकारी होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बकरी पालन में स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्या अथवा घाव किसी भी समय बिना किसी पूर्व चेतावनी के देखे जा सकते हैं। इन समस्याओं से बड़े नुकसान की सम्भावना बन सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि बकरी पालक बकरी की प्राथमिक चिकित्सा के बुनियादी साधनों और पहलुओं को समझें ।

चोट लगने पर : घाव को एन्टीसेप्टिक से साफ कर मलहम लगायें। यदि घाव से खून आ रहा है तो घाव पर फिटकरी पीस कर बाधें । घाव से खून रोकने के लिये कत्था का पेस्ट या फेरिक क्लोराइड का प्रयोग भी कर सकते हैं। घाव में कीड़े पड़ने पर तारपीन के तेल में कपूर पीसकर मिलाकर लगाऐं। घाव में बंद मवाद युक्त फोड़ा बन जाने पर मैग सेल्फ व तूतिया को बराबर मात्रा में मिलाकर एक दिन के अन्तराल पर प्रयोग करें। खुरों में घाव होने पर 2 प्रतिशत का तूतिया का घोल (2 ग्राम प्रति लीटर) का प्रयोग करें ।

खुजली का घाव होने पर :खुजली का घाव होने पर सल्फर का मलहम बनाकर प्रयोग करें। दाद, खाज, एक्जीमा होने पर प्याज व लहसुन की बराबर मात्रा पीसकर उसका रस निकाल कर उसका 10-15 दिन लगातार प्रयोग करें ।

खुजली से प्रभावित बकरी

सींग टूटने पर :सींग टूटने पर खून रोकने के लिये सींग की जड़ के पास से रस्सी या पट्टी को बाँध दें तथा फिटकरी को सरसो के तेल में मिलाकर पट्टी कर दें। यदि टिक्चर बेन्जोइन उपलब्ध हो तो उससे पट्टी कर दें।

रसौली होने पर : रसौली के ऊपर गर्म पानी में मैगसेल्फ मिलाकर साफ कर आयोडीन मलहम का प्रयोग करे जिससे वह पककर फूट जायेगी। तब लाल दवा का प्रयोग करें। कन्धा आने पर मैगसेल्फ को पानी में मिलाकर (50 ग्राम/लीटर) सिकाई करें तथा काले मलहम (आयोडीन मलहम) को 10–15 दिन प्रयोग करें। गाँठ बनने पर मैगसेल्फ से सिकाई करने के उपरान्त सूमैग मलहम का प्रयोग करें। पकने के उपरान्त चीरा लगाकर लाल दवा (मरक्यूरोक्रोम) से पट्टी करें।

संस्थान गीत

जयति जय बकरी संस्थान की
बृज भूमि गौरव महान की –जयति जय
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम
भारत के सम्पूर्ण प्रदक्षिण
बकरी उत्पादन विकास समर्पित
सेवारत निर्धन किसान की –जयति जय
पोषण, स्वास्थ्य, जनन, प्रबन्धन
दूध– माँस का गुण सम्वर्धन
दैहिकी, आनुवंशिकी तकनीकी
निर्झर सरिता अजा ज्ञान की –जयति जय
शिक्षण, शोध और प्रशिक्षण
संसाधन विकास, संरक्षण
विस्तारित कर नव तकनीकी
सुखद स्वप्न कोटिक किसान की –जयति जय

दिनेश कुमार शर्मा 'सीमापति'

वन चारागाहों की स्थापना

राजकुमार सिंह एवं डोरी लाल गुप्ता

वन चारागाहों की स्थापना में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:

- **स्थान का चुनाव:** कम उपजाऊ, परती या ऊबड़ खाबड़ भूमियाँ इस उद्देश्य के लिए चुनी जाती हैं। आवश्यकतानुसार इस प्रकार की भूमियों का समतलीकरण एवं उनमें पाये जाने वाले अवांछनीय पौधों एवं झाड़ियों को निकाल देना चाहिए।
- **भूमि की जाँच:** भूमि में पी.एच, एन पी के तथा सूक्ष्म तत्वों की उपस्थिति की जानकारी हेतु उनका भौतिक एवं रासायनिक विश्लेषण करके पोषक तत्वों की कमी को दूर करने का प्रबन्ध करना चाहिए।
- **घासों, दलहनी चारे एवं वृक्षों का चुनाव:** पशुओं द्वारा पसन्द किए जाने वाली घासों, दलहनी चारों एवं वृक्षों की उपयुक्त प्रजातियों का मौसमी परिस्थितियों के आधार पर चुनाव करना चाहिए।
- **बीजों की बुवाई एवं पौधों की रोपाई:** पैलेटेड विधि से तैयार बीजों को मानसून की प्रथम वर्षा पर जुते हुए खेत में पंक्तियों में बोना या बिखेर देना चाहिए। बीज पानी सोखकर अंकुरित हो जाते हैं। एक हेक्टेयर के क्षेत्र में करीब 4–8 किलो बीज आवश्यक होता है। बुवाई से पूर्व खेत में उपयुक्त उर्वरक एवं खाद का प्रयोग करना चाहिए। चारे दार वृक्षों की पौध की खेत में 5 मीटर पर 5 मीटर की दूरी या वृक्षों के प्रकार के आधार पर रोपाई करनी चाहिए। परन्तु इस अवस्था में दूरी इस प्रकार रखनी चाहिए जिससे कि पौधों के बीच निकाई गुड़ाई आदि आसानी से की जा सके।

प्रबन्धन विधियाँ

- वन चारागाह एवं घास चारागाह का प्रबन्ध आर्थिक रूप से लम्बे समय तक भूमि पर आच्छादित पादपों को बिना हानि पहुँचाये पशुओं की पोषण पूर्ति हेतु किया जाता है। भूमि और उस पर पाये जाने वाले पोधों के बीच प्राकृतिक या उन्नत पादप विकास हेतु एक गहरा सम्बन्ध होता है।
- वन चारागाहों या उन्नत चारागाहों का प्रबन्ध उनकी गुणवत्ता एवं मात्रा के संतुलन को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए चारागाहों की कटाई या चराई उनकी परिपक्व स्थिति में करने पर अधिकतम शुष्क पदार्थ प्राप्त होता है। परन्तु पोषक मूल्य में कमी होती है। चारे की प्रारम्भिक अवस्था में कटाई करने पर पोषक मूल्य तो अच्छा प्राप्त होता है परन्तु शुष्क पदार्थ में कमी होती है। इसलिए चारे की गुणवत्ता एवं मात्रा में एक संतुलन होना चाहिए।
- दलहनी चारों एवं घासों को मिलाकर उगाना गुणवत्ता एवं मात्रा के लिए काफी अच्छा होता है। जबकि दलहनी चारों एवं घासों के बीच संसाधनों एवं स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा होती है। इसलिए ऐसे दलहनी चारों एवं घासों का चुनाव करना चाहिए जो एक दूसरे के प्रति अनुकूल हों। वर्षा के मौसम में चारा उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है, जबकि गर्मी के मौसम में कमी उत्पन्न हो जाती है। इसलिए चारे की कमी होने पर प्रयोग हेतु उसके भंडारण की विभिन्न विधियों का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे कमी की अवस्था में उसका प्रयोग किया जा सके। प्रत्येक चारागाह की उत्पादन क्षमता भूमि की उर्वरता एवं कृषि योग्य जलवायु की परिस्थितियों पर निर्भर करती है। चारागाहों में चारे वाले वृक्षों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। गर्मियों में पत्तियाँ व फलियाँ उत्पादन करने वाले वृक्षों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। चारागाह का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से ही करना चाहिए जिससे कि उसकी पुर्नवृद्धि होती रहे तथा अधिक समय तक उच्च गुणवत्ता युक्त चारा प्राप्त होता रहे।

संस्थान जनित बकरी पालन तकनीकी अंगीकृत करने पर बकरी व्यवसाय की आय पर प्रभाव–एक बकरी पालक की सफलता कहानी

एम. के. सिंह, एम. एस. डिगे, ए. के. दीक्षित, सौविक पाल एवं नीतिका शर्मा

वृन्दावन मथुरा निवासी श्री रासिद, एक शिक्षित उद्यमी हैं ने सी.आई.आर.जी. केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान से बकरी पालन पर 2013 में प्रशिक्षण प्राप्त कर, जनवरी 2016 में बहुगुणक बकरी व्यवसाय प्रारम्भ किया। सी.आई.आर.जी. से उन्हें 17 बकरियाँ उत्पादकता सम्पादन क्षमता के अध्ययन हेतु दी गई। ये बकरियाँ बरबरी नस्ल की थीं । बकरियों को सघन पद्धति द्वारा पोषित किया गया कुल 5 प्रतिशत जानवरों को अर्ध संघन पद्धति में भी रखा गया।

कुल 17 बकरियों में तीन व्यसक बकरियाँ, तीन अवयस्क बकरियाँ, एक प्रजनक बकरा तथा पाँच–पाँच नर एवं मादा मेमने थे। कुल 23 मेमनों का जन्म हुआ जिनमें से चार मृत्यु को प्राप्त हुए और पाँच मेमनों को तीन माह की उम्र में बेच दिया गया । प्रक्षेत्र पर कुल प्रारम्भिक मृत्यु दर 40 प्रतिशत पायी गयी जो कालान्तर में नगन्य हो गयी । उत्पन्न मेमनों का अभिलेखित वजन 2.4 किलो जन्म पर, 12–13 किलो तीन माह पर, 18–20 किलो छः माह पर, 25–26 किलो 9 माह पर तथा 32–35 किलो 12 माह की आयु पर पाया गया। दुग्ध उत्पादन 1.5 लीटर (1.5 लीटर प्रति दिन 60 दिन तक) देखा गया । कुल 200 से 300 ग्राम दाना प्रति बकरी के साथ हरा चारा भी बकरियों को दिया गया । बकरी आहार एवं चारे की कुल लागत रूपये 10–12 प्रति बकरी प्रतिदिन (रू. 2–3 अन्य खर्चे शामिल) प्रति जानवर देखा गया । प्राप्त मेमनों से 14 मेमनों का मूल्य रूपये 12000 से 15000 प्रति पशु के हिसाब से रूपये 182000 आंका गया। कुल खर्च 70000 रूपये घटाकर प्राप्त अनुमानित आय 117000 रूपये थी । इस प्रकार प्रति बकरी प्राप्त आय लगभग 8000 रूपये की आंकी गई।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

- दिनांक 16 से 25 मार्च सितम्बर, 2017 तक 69वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यक्रम में देश के 19 राज्यों से 102 सहभागियों (96 पुरूष और 6 महिलाएँ) ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 18 से 27 मई 2017 तक 70वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 12 राज्यों से आये 97 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रायोजित प्रशिक्षण

पशु चिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण

- संस्थान में दिनांक 19-25 जनवरी, 2017 की अवधि में आयोजित एवं पंजाब सरकार द्वारा वित्त पोषित प्रशिक्षण कार्यक्रम में 13 पशु चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया तथा बकरी पालन संबंधी विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 31 जनवरी से 2 फरवरी, 2017 के दौरान संस्थान में उड़ीसा के वोटी संस्थान द्वारा भेजे गए 10 पशु चिकित्सा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया और उसका सफलतापूर्वक संपादन किया। यह प्रशिक्षण एक बार फिर दिनांक 7-9 फरवरी, 2017 के दौरान आयोजित किया गया जिसमें उड़ीसा के वोटी संस्थान द्वारा भेजे गए 10 पशु चिकित्सा अधिकारियों ने सहभागिता की।
- दिनांक 1-7 मार्च, 2017 के मध्य एक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग द्वारा भेजे गये 15 पशु चिकित्सा अधिकारियों के लिए आयोजित किया और उसका सफलतापूर्वक संपादन किया।
- दिनांक 5-9 जून , 2017 की अवधि में संस्थान द्वारा एक प्रशिक्षण पशु पालन विभाग उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में आयोजित किया गया । इसमें 14 पशु चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया।

किसान प्रशिक्षण

- दिनांक 2-6 फरवरी, 2017 के दौरान संस्थान आयोजित एवं उत्तर प्रदेश सरकार के सिंचाई विभाग द्वारा वित्त पोषित प्रशिक्षण में 20 किसानों ने बकरी पालन पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 20-23 फरवरी, 2017 को संस्थान आयोजित एवं उड़ीसा सरकार द्वारा वित्त पोषित प्रशिक्षण में 10 किसानों ने सहभागिता की।
- दिनांक 29 मई से 21 जून, 2017 की कालावधि में संस्थान आयोजित एवं आई. आई. एस. डव्ल्यू सी., कोटा द्वारा वित्त पोषित प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रदर्शनी/किसान मेला

- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा आयोजित मेले में दिनांक 4 जनवरी, 2017 को संस्थान द्वारा सहभागिता की गई ।

प्रदर्शनी / किसान मेला

- दिनांक 24–27 फरवरी, 2017 को चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना में आयोजित मेले में संस्थान की तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा नई दिल्ली में आयोजित कृषि उन्नति मेले में सहभागिता की गई।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उत्तरी क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, पटना द्वारा मोतीहारी में आयोजित मेले में दिनांक 13–19 अप्रैल, 2017 को सहभागिता की गई।
- दिनांक 6–7 मई, 2017 को टीकमगढ, मध्य प्रदेश में आयोजित बुंदेलखंड सृजन 2017 राष्ट्रीय एक्सपो में संस्थान की तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

सभा / आयोजन

गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान में 26 जनवरी, 2017 को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान ने ध्वजारोहण किया गया तथा महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। डा. सिंह ने इस अवसर पर संस्थान के सभी कर्मचारियों को बधाई दी। निदेशक महोदय ने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध कार्यो की प्रशंसा की तथा बकरी पालन में किसानों को दिए जा रहे उनके योगदान को सराहा।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान में दिनांक 21 जून, 2017 को योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एक योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के सभी वर्गों के अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं संस्थान परिसर में निवासरत परिसरवासियों ने भाग लिया। योग निर्देशक ने सभी कर्मचारियों को योग करने के लिए प्रेरित किया तथा इसे अपने जीवन में अपनाने हेतु आग्रह किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान ने सभी को योग जैसी स्वस्थ परम्परा के बारे में अवगत कराया।

सभा / आयोजन

• आई.सी.ए.आर.-ए.आई.सी.आर.पी. (बकरी सुधार परियोजना)

बकरी सुधार परियोजना की 17वीं वार्षिक बैठक दिनांक 12-13 जून, 2017 को लेह -लद्दाख में शेरे कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय के केन्द्र स्टकना में सम्पन्न हुई। इस वार्षिक बैठक का उदघाटन प्रो. नजीर अहमद, कुलपति (एस.के.यू.एस.टी., श्रीनगर, कश्मीर) द्वारा किया गया। इस अवसर पर डा. सोनम दावा लोम्पो , सी.ई.सी. लेह मुख्य अतिथि थे। डा. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त परिषद से पधारे डा. आर. एस. गांधी, सहायक महानिदेशक (पशु प्रजनन), डा. एम. एस. चौहान, निदेशक, के.ब.अ.सं., मखदूम, डा. पी.के. राउत, प्रभारी परियोजना समन्वयक, डा. विनीत भसीन, प्रधान वैज्ञानिक (आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली) तथा ए.आई.सी.आर.पी यूनिट के प्रभारी वैज्ञानिक/प्रोफेसर्स उपस्थित थे। इस अवसर पर डा. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा सम्बोधित किया गया। उन्होंने देश में पाई जाने वाली अन्य बकरी की नस्लों पर भी शोध कार्य करने हेतु सुझाव दिया। माननीय कुलपति महोदय ने कोल्ड एरिड माउन्टेन में पशुपालन की उपयोगिता को रेखांकित किया। डा. सोनम दावा लोम्पो, सी.ई.जी. ने लेह क्षेत्र में बकरी पालन के महत्व को बताया तथा इस क्षेत्र में पशु चरागाहों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर सभी यूनिट प्रभारियों द्वारा अपने वार्षिक शोध का लेखा जोखा प्रस्तुत किया।

• बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान ब्रेन स्टार्मिंग सेशन (विचार मंथन)

दिनांक 3 मई, 2017 को संस्थान में बकरियों के कृत्रिम गर्भाधान विषय पर एक ब्रेन स्टार्मिंग सेशन का आयोजन किया गया। इस सेशन की अध्यक्षता परिषद के पूर्व उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) एवं पूर्व कुलपति दुवासु, मथुरा एवं पी.डी.के.वी., अकोला डा. एम. एल. मदान द्वारा की गई। इस अवसर पर आमंत्रित विशेषज्ञ डा. के.पी. अग्रवाल, डा. एस. एम. के. नकवी, निदेशक, के. भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, डा. टी.के. मोहन्ती, प्रधान वैज्ञानिक, एन.डी.आर.आई., करनाल, डा. पी.एस. यादव, प्रधान वैज्ञानिक, के. भैंस अनु.सं., हिसार, डा. प्रदीप धलसासी, नारी फाल्टन, डा. सैयद मो. शाह, श्रीनगर, डा. अतुल सक्सेना, डा. सर्वजीत यादव, विभागाध्यक्ष, दुवासु, मथुरा संस्थान निदेशक डा. एम. एस. चौहान व संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों ने सहभागिता की। डा. एम. एस. चौहान ने स्वागत भाषण दिया साथ ही कृत्रिम गर्भाधान के महत्व एवं उपयोगिता को रेखांकित किया। सभा के अध्यक्ष डा. मदान ने बकरी के कृत्रिम गर्भाधान हेतु मॉडल प्रोटोकाल विकसित करने पर बल दिया तथा इसमें और अधिक शोध कार्य की आवश्यकता बताई।

• राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह

संस्थान में दिनांक 12-18 फरवरी, 2017 के अन्तर्गत राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह मनाया गया। दिनांक 12 फरवरी, 2017 को एक सभा आयोजित की गई जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी वर्ग, प्रशासन एवं शोध छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। दिनांक 13 फरवरी, 2017 को बकरी उत्पादकता पर सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक द्वारा देश की अर्थव्यवस्था एवं आजीविका संरक्षण में बकरी की उपयोगिता को रेखांकित किया। इस दौरान फरह ब्लॉक के तीन गांवों से आये 85 बकरी पालकों को उन्नत बकरी पालन पर चार व्याख्यान दिए गए, इनमें 35 महिला कृषक भी शमिल थीं। महिलाओं को बकरी पनीर बनाना सिखाया गया। दिनांक 16 फरवरी, 2017 को संस्थान में एक पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सभा / आयोजन

• स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत दिनांक 16-31 मई, 2017 को संस्थान में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य स्वच्छ एवं हरित संस्थान बनाना था। इस दौरान सभी विभागों को स्वच्छता का पालन करने के लिए प्रेरित किया गया। कूड़े कचरे के निस्तारण हेतु योजना बनाई गई एवं कूड़े को सार्वजनिक स्थान पर जलाने पर रोक लगाई गई। इसके साथ ही परिपत्र के माध्यम से सभी को स्वच्छता अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

• वार्षिक खेलकूद

संस्थान द्वारा दिनांक 23 से 26 जनवरी, 2017 के मध्य वार्षिक खेलकूद का आयोजन किया गया । इसमें संस्थान निदेशक डा. एम. एस. चौहान की प्रेरणा से विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रदर्शन संस्थान के कर्मचारियों द्वारा किया गया। इससे संस्थान में खेलों के प्रति अभिरूचि बढ़ी है। मैदानी खेलों में बालीवाल, कबड्डी, फुटबाल, क्रिकेट एवं एथलेटिक्स खेल शामिल थे। अंतकक्ष खेलों में बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, चैस, एवं कैरम प्रतियोगिताऐं कराई गई। दिनांक 25 जनवरी, 2017 को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन महिला क्लब द्वारा श्रीमति बीना चौहान, अध्यक्ष, महिला क्लब, सी.आई.आर.जी. के निर्देशन में किया गया।

• त्रैमासिक बैठक

राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 03 मार्च, 2017 को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में किया गया। इन बैठकों में संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, अनुभाग प्रभारी व संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। बैठकों के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किये गये कार्य कलापों पर गहन विचार-विमर्श किया गया तथा संस्थान निदेशक द्वारा समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को संस्थान के 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने हेतु निर्देशित किया गया । प्रशासनिक अधिकारी व प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रत्येक दशा में धारा 3(3) का अनुपालन करने के लिये निर्देशित किया गया।

• एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 25 मार्च, 2017 को चतुर्थ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। यह कार्यशाला बकरी पालन पर 69वें वैज्ञानिक राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम के दौरान आयोजित की गई । कार्यशाला में डा. हरिऔध तिवारी, प्रभारी राजभाषा अनुभाग द्वारा 'हिन्दी शब्दों का सरल उपयोग' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आये 102 प्रशिक्षणार्थियों तथा संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों एवं अधिकारी द्वारा सहभागिता की गई।

विशिष्ट अतिथि दौरा

दिनांक 25 मार्च, 2017 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली से पधारे डा. नरेन्द्र सिंह राठौर, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) द्वारा किसान प्रशिक्षण हॉल का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर आयोजित किसानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह पर प्रमाण पत्र वितरित किए गए। संस्थान निदेशक डा. एम. एस. चौहान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली प्रोफेसर डा. एच. रहमान के संस्थान भ्रमण पर दिनांक 06-07 जनवरी 2017 को संस्थान में विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। जिनमें उप महानिदेशक ने अपनी रूचि दिखाते हुए संस्थान कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

दिनांक 18 मई, 2017 को जी.एल.ए. के कुलपति डा. डी.एस. चौहान ने संस्थान का भ्रमण किया।

सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष डा. एस.के. जिन्दल को आई.एस.एस.जी.पी.यू. द्वारा उनके बकरी पालन शोध कार्य में सराहनीय योगदान के लिए सोसाइटी की फैलोशिप से सम्मानित किया।
- डा. मनमोहन सिंह चौहान, निदेशक केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान को सोसायटी ऑफ एक्सटेंसन एडुकेशन द्वारा उनके उत्कृष्ट अध्यापन, अनुसंधान एवं विस्तार प्रबन्ध के लिए वर्ष 2017 के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- 8 वीं राष्ट्रीय विस्तार शिक्षा कांग्रेस-2017 में संस्थान प्रधान वैज्ञानिक डा. मनोज कुमार सिंह को सर्वश्रेष्ठ विस्तार पेशेवर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- संस्थान के प्रदर्शनी स्टॉल का उन्नत कृषि मेला, 2017 पूसा, नई दिल्ली में सराहना पुरस्कार प्रदान किया गया।

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565-2763380, फैक्स न.: 0565-2763246
ई-मेल: director@cirg.res.in,
बेबसाइट: http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565-2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई-मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित